परमात्म ऊर्जा

एकाग्रता और अंतर्मुखता का व्रत रखो

एकाग्रता का आधार अंतर्मुखता है। जैसे शक्तियों के जड़ चित्रों में वरदान देने का स्थूल रूप हस्तों के रूप में दिखाया गया है। वरदान का पॉज हस्त, दृष्टि और बैठक एकाग्र ही दिखाते हैं। ऐसे चैतन्य रूप में एकाग्रता की शक्ति को बढ़ाओ, तब रूहों की रूहानी सेवा कर सकेंगे। अप्राप्त आत्माओं को अशांत, दुःखी, रोगी आत्माओं को दूर बैठे भी शांति, शक्ति और निरोगी भव का वरदान दे सकेंगे। ऐसे सेवा करने के लिए एकाग्रता और अंतर्मुखता का व्रत रखना पड़े। इस व्रत से अन्य आत्माओं की वृत्तियों को परिवर्तन कर सकेंगे। जैसे भक्त लोग स्थूल भोजन का व्रत रखते हैं, ऐसे ही सर्विसएबुल ज्ञानी तू आत्मा को व्यर्थ संकल्प, बोल, कर्म की हलचल से परे, एकाग्रता अर्थात् रूहानियत में रहने का व्रत लेना पड़े। तब आत्माओं को ज्ञानसूर्य का चमत्कार दिखा सकेंगे। एकाग्रता की शक्ति बहुत विचित्र रंग दिखा सकती है। दुनिया वाले भी एकाग्रता और अंतर्मुखता की शक्ति से ही सिद्धियां प्राप्त करते हैं। स्वयं के शरीर की औषधि भी एकाग्रता की शक्ति से करते हैं और अनेक रोगियों को निरोगी भी बना सकते हैं। कोई चलती हुई चीज़ को रोकना, बारिश को गिराना, बारिश को रोकना, पानी और आग पर चलना यह सब एकाग्रता की सिद्धियां हैं इसलिए जितना समय मिले, दो या पाँच मिनट, तब चले जाओ इस एकाग्रता की और अंतर्मुखता की गुफा में। थोड़ा-थोड़ा, करते-करते जमा होता जाएगा तब शक्तियों द्वारा सर्वशक्तिवान प्रत्यक्ष होगा।

कथा सरिता

सच्चा मित्र कौन...!!!

एक बहुत सुन्दर जंगल में, दो गहरे मित्र रहते थे - राजू और विनोद। वे बचपन से ही साथ खेलते और बड़े हुए थे। एक दिन, वे जंगल में सैर करने के लिए निकले और हँसते-खेलते जंगल के गहरे भाग में चले गए। अचानक, उन्हें एक विशाल भालू नज़र आया। भालू को देखकर राजू बिना विचारे एक पेड़ पर चढ़ गया और विनोद को नीचे छोड़ दिया।

विनोद, जो पेड़ पर चढ़ना नहीं जानता था, समझदारी दिखाते हुए ज़मीन पर लेट गया और साँस रोककर मरा हुआ होने का नाटक करने लगा। भालू धीरे-धीरे उसके पास आया और उसके कान के पास अपनी नाक लगाकर सूंघने लगा। विनोद एकदम शांत रहा। भालू को लगा कि वह मर चुका है, और वह चला गया।

वह भालू चला गया, तो राजू पेड़ से नीचे उतरा और विनोद से पूछा, "भालू ने तुम्हारे कान में क्या कहा?" विनोद ने उठते हुए जवाब दिया, "उसने मुझसे कहा कि सच्चे मित्र हमेशा साथ देते हैं।" यह सुनकर राजू को अपने किए पर शर्मिंदगी हुई। उसे एहसास हुआ कि उसने अपने मित्र को अकेले खतरे में छोड़ दिया था।

इस घटना ने राजू को एक महत्वपूर्ण सबक सिखाया। उसने विनोद से माफी मांगी और वादा किया कि वह भविष्य में कभी भी उसे अकेला नहीं छोड़ेगा। विनोद ने उसे क्षमा कर दिया, और उनकी मित्रता पहले से भी ज्यादा मजबूत हो गई।

सीख: सच्चा मित्र वही है जो मुसीबत में साथ देता है। इस कहानी से हमें यह सीखने को मिलता है कि संकट के समय में सच्चे मित्र की पहचान होती है। विनोद और राजू की कहानी हमें बताती है कि साहस और सच्ची दोस्ती हमेशा बाधाओं को पार करने में मदद करती है।

सोने की ईंटें

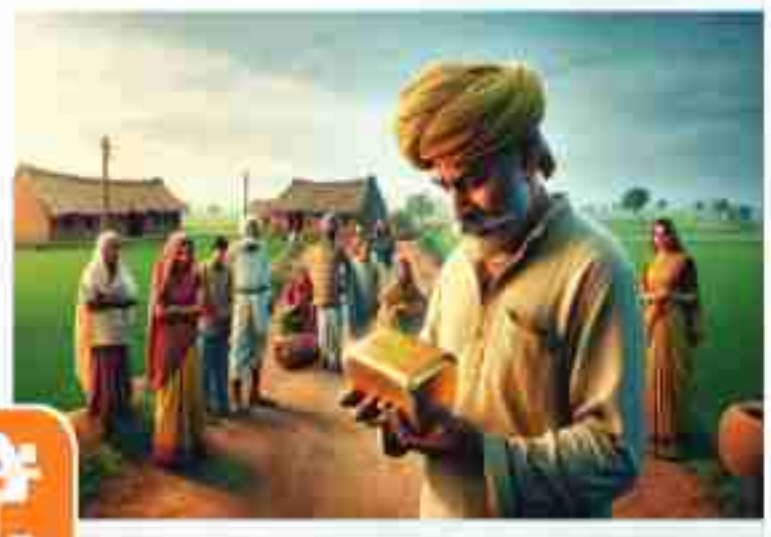

एक छोटे से सुंदर गाँव में एक ईमानदार और मेहनती किसान रहता था। उसका नाम रामू था। वह अपने खेतों में दिन-रात मेहनत करता और अपने परिवार का पालन-पोषण करता। एक दिन, जब वह अपने खेत में हल चला रहा था, उसे ज़मीन के नीचे कुछ चमकीली चीज़ें दिखाई दीं। जैसे ही वह नीचे झुका तो उसने देखा कि वे सोने की ईंटें थीं।

रामू के लिए यह एक अप्रत्याशित खज़ाना था। उसे लगा कि यह उसके सभी दुःखों का अंत हो सकता है। लेकिन उसने इन ईंटों को बेचकर धनवान बनने की बजाय एक अलग ही फैसला किया। उसने सोचा कि यह खज़ाना उसके अकेले का नहीं है, बल्कि पूरे गाँव का है।

रामू ने गाँव के सभी लोगों को इकट्ठा किया और उन्हें बताया कि उसे खेत में सोने की ईंटें मिली हैं। उसने फैसला किया कि वह इन ईंटों को सभी गाँव वालों के साथ साझा करेगा। इस निर्णय से गाँव वाले बहुत खुश हुए और रामू की उदारता की प्रशंसा की।

सोने की ईंटें पाकर, गाँव वालों ने अपने जीवन में सुधार किया। वे अपने घरों को सुधारने लगे, अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा देने लगे और गाँव में विकास के नए प्रोजेक्ट शुरू किए। गाँव का हर व्यक्ति रामू के इस निर्णय से प्रेरित हुआ और उसके सम्मान में अपने-अपने तरीके से योगदान देने लगा। रामू के इस कार्य ने न केवल गाँव के लोगों के बीच और आर्थिक सम्पन्नता लाई, बल्कि उनके बीच आपसी प्रेम और समर्थन की भावना भी मजबूत हुई। उसकी इस उदारता ने पूरे गाँव को एक परिवार की तरह जोड़ दिया।

शिक्षा: साझा करने से न केवल धन, बल्कि प्यार और सम्मान भी बढ़ता है। रामू की कहानी हमें बताती है कि सच्ची समृद्धि तब होती है जब हम अपने संसाधनों को दूसरों के साथ बाँटते हैं और साथ मिलकर आगे बढ़ते हैं।

श्योपुर-म.प्र.। "संगमः गौरवपूर्ण वृद्धावस्था एवं सम्मानित जीवन" अभियान के तहत होली पर्व के अवसर पर बीरपुर गीता पाठशाला में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शशि व सीनियर सिटीजन मातृशक्ति।

इमलीभाठा-बिलासपुर(छ.ग.)। इंटरनेशनल वुमेन्स डे पर दीपराज भवन गीता पाठशाला में मितानिन दीदीयों के लिए आयोजित सम्मान समारोह के पश्चात् समूह चित्र में अध्यक्ष सुखमति पाली, उपाध्यक्ष नोनी मानिकपुरी एवं सरस्वती साहू, सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. दीपा, ब्र.कु. अंजू एवं अन्य।

नरसिंहपुर-म.प्र.। स्थानीय हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी स्थित दिव्य संस्कार भवन में 'शिक्षक स्नेह मिलन' समारोह का दीप प्रज्वलन कर शुभारम्भ करते हुए सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. पूजा, आर डी वर्मा, प्रधानाचार्य, शिक्षकगण, शिक्षाविद तथा अन्य।

छतरपुर-हरपालपुर(म.प्र.)। विश्व स्वास्थ्य दिवस पर नशा मुक्त भारत अभियान के तहत आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में चिकित्सा अधिकारी स्वास्थ्य केन्द्र डॉ. उदय प्रकाश सेन,चुरवारी, डॉ. अरविंद कुमार राजपूत,रानीपुर कैमाहा, डॉ. सुनील राजपूत,नौगांव, डॉ. योगेंद्र दीक्षित,लाइफ हेल्थ केयर हॉस्पिटल, डॉ. केके सोनी, डॉ. दिनेश राजपूत, ब्र.कु. पूनम तथा अन्य अतिथिगण।

रायपुर-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान एवं भारत शासन के नारकोटिक्स कन्ट्रोल ब्यूरो के संयुक्त तत्वावधान में केन्द्रीय विद्यालय डब्लू.आर.एस. के बच्चों को नशामुक्त के लिए शपथ दिलाते हुए राजयोग शिक्षिका ब्र.कु. सौम्या बहन, ब्र.कु. अनूप बहन, नारकोटिक्स कन्ट्रोल ब्यूरो के इंस्पेक्टर सुनील कुमार वर्मा एवं केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य अशोक कुमार चन्द्राकर।

बैकुंठ-छ.ग.। ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा चलाए गए नशा मुक्त भारत अभियान के तहत आयोजित अल्ट्राटेक सीमेंट प्लांट की भारी वाहन चालकों के लिए सड़क सुरक्षा सप्ताह कार्यक्रम को संबोधित करते हुए जिला सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रियंका।

आलोट-म.प्र.। सांदीपनि विद्यालय में शिक्षकगण के लिए आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में सांदीपनि विद्यालय के प्रिंसिपल फिरोज खान, रतलाम सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सविता, ब्र.कु. गीता, शिक्षकगण तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनें।

देवला-गढ़ा। विश्व स्वास्थ्य दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में डॉ. नवनाथ ठाकुर, डॉ. किशोर पहिलवान, डॉ. संजय जाधव, डॉ. विद्या जाधव, डॉ. गणेश सवलके, डॉ. किरण औंधाडे, ब्र.कु. नीता, ब्र.कु. अनुराधा तथा अन्य अतिथिगण।